अध्याय 23

रूसी क्रांति

देवेत्री भट्टाचार्य
लेडी श्रीराम कॉलेज

आधुनिक क्रांतियां विभिन्न मुद्दों पर लड़ी गई हैं और उनमें से एक महत्त्वपूर्ण लड़ाई लोगों की वैध राजव्यवस्था (legitimate polity) की मांग को लेकर हुई। 1917 ई. में रूस में इस वैध राजव्यवस्था की मांग को लेकर तीन क्रांतियां हुई। फरवरी क्रांति तक रूस ज़ार निकोलस द्वितीय के अधीन तानाशाही साम्राज्य था। फरवरी से अक्तूबर क्रांति तक अस्थायी सरकार बगैर निर्वाचित संसद की तरह तथा मजदूर और किसानों के सोवियत (जोकि निर्वाचित संसद की तरह कार्य करते थे) ने मिलकर शासन संभाला। अक्टूबर में बोल्शेविक क्रांति के बाद रूस में जो सरकार स्थापित हुई उसके बारे में सत्ता में आए लेनिनवादियों ने दावा किया कि यह राजव्यवस्था मार्क्सवादी विचारधारा की बुनियाद पर वैध है। इस प्रकार 1917 की क्रांति राजनीतिक वैधता से जुड़े हुए कई प्रकार के संकटों से घिरी हुई थी।

रूस ने जब 20वीं सदी में प्रवेश किया उस समय वहाँ कोई संसदीय परंपरा नहीं थी जबकि अन्य यूरोपीय राजशाही देशों में भी नागरिकता जैसा प्रावधान था। यहां तक कि 1905 की क्रांति तक रूस में राजनीतिक दल और मजदूर संघ जैसे संस्थाओं का अभाव था जो लोकतांत्रिक रूप प्रस्तुत करते थे। जबकि 1860 से क्रांतिकारी आन्दोलनों ने विभिन्न विचारधाराओं के तहत अपनों को स्थापित करना शुरू कर दिया था। पश्चिमी दुनिया की पहली क्रांतिकारी संस्था 'द पीपुल्स विल' की स्थापना 1879 में हुई। अक्टूबर में बोल्शेविक क्रांति के बाद वैध राजव्यवस्था के अभाव से ज़ार शासन और भूमिगत क्रांतिकारी सेवा के बीच का यह संघर्ष तब और गहरा गया। शासक वर्ग और एक विशाल लेकिन गरीब और अशिक्षित कृषक वर्ग के बीच एक गहरी खाई थी जो दोनों वर्गों को पृथक करती थी। पूंजीवाद भी ऐसे समय में जड़ें फैला रहा था जब अनन्य आर्थिक विभिन्नता थी और कई राष्ट्रीयता और धार्मिक संस्कृतियाँ विद्यमान थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद रूस के इतिहास का अध्ययन व्यवस्थापित तरीके से प्रारम्भ हुआ। रूसीवाद (Sovietology) पश्चिमी शीतयुद्ध के एक

जापान के साथ युद्ध ने पहले ही रूसी सेना के सामने अपमानजनक और शर्मसार स्थिति उत्पन्न कर दी थी। अपूर्ण साज-सज्जा वाली सेना और अयोग्य नेतृत्व के कारण रूस को जापान से मुंह की खानी पड़ी और इस घटना ने सरकार को और अधिक अलोकप्रिय बना दिया। लोकतांत्रिक विरोधों और बुद्धिजीवी आंदोलनों की संख्या बढ़ने लगी। सुधारपत्र जार को भेजे गये जिसमें राष्ट्रीय संसद और विधायी प्रक्रिया में ज्यादा हिस्सेदारी की मांग की गई। जबकि एक राजकीय घोषणा के द्वारा दुमा नामक एक असेंबली बनाने की बात कही गई जो सीमित चुनाव पर आधारित होगी। इस प्रकार व्यक्तिगत शासन और आधिपत्य जारी रखने की बात कही गई जिसने सुधारवादियों और बुद्धिजीवियों की हतोत्साहित कर दिया। देश अब दो धड़ों में बँट गया और मेनिफेस्टो के घोषणा के तुरंत बाद सड़कों पर झड़पें शुरू हो गईं।

सेना ग्रामीण जनसंख्या पर बुरी तरह से टूट पड़ी और शहरों में मजदूर वर्ग को अपना शिकार बनाया। क्रूर बर्ताव किए गए और सोवियत नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। हजारों समाजवादियों को या तो जेल में बंद कर दिया गया या विदेश भेज दिया गया या मौत के घाट उतार दिया गया। 1905 ने लिबरल लोकतांत्रिकों और समाजवादियों को एक बार फिर से हमेशा के लिए बांट दिया। एक संवैधानिक लोकतांत्रिक आंदोलन अब फिर कभी किसी रूप में नहीं उभर पाया और ध्रुवीकरण काफी गहरा हो गया। 1905 की क्रांति असफल रही लेकिन यह कई पाठ सिखा गई जो क्रांति के नीतियों से संबंधित थे। अब लेनिन के नेतृत्व में उन्होंने मैंशेविक के साथ किसी भी प्रकार का संबंध न रखने का फैसला किया।

कुछ देर के लिए अब हम डुमा के कार्यान्वयन पर गौर करेंगे जो 1906 से फरवरी 1917 तक अस्तित्व में रहा। पीटर स्टोलोपिन, प्रधानमंत्री, ने 1906 से अगस्त 1911 में अपने मृत्यु तक डुमा का नेतृत्त्व किया। इस काल में रूस में कई राजनीतिक घटनाएं हुईं। कैडेट डुमा में सबसे बड़ी लिबरल पार्टी थी। सोशल डेमोक्रैट्स (मैंशेविक और बोल्शेविक) और सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरिज़ (एस.आर.) ने पहले चुनावों का विरोध किया और बाद में दूसरी डुमा में बड़ी सख्या में जीत कर प्रवेश किया। जिसमें त्रुदोविनी नामक मजदूर दल उसका सहयोगी था।

एस.आर. क्रांतिकारी आंदोलन चलता रहा और कृषकों ने अपने हमले जारी रखे। स्टोलोपिन ने कुछ सुधार पेश किए जो उसके अनुसार सरकार को मजबूती प्रदान करने के लिए था। वह राजकीय संस्थाओं को जो जैसे स्थानीय

उच्चवर्ग और कृषक और मजदूर वर्ग के बीच का था। यह वर्ग भी अब जार के विरोध में आ गया और 1905 से राजनीतिक सुधार की मांग करने लगा।

1905 की क्रांति 19 जनवरी की एक सर्द सुबह को शुरू हुई जब 1,50,000 मजदूर जार के शीतमहल की ओर मार्च कर रहे थे, जिसका नेतृत्व फादर जोर्ज गैपन (Father George Gapon) कर रहे थे। गैपन एक पादरी थे जो लोगों के साथ सफल तरीके से जुड़ते थे और 1903 से पुलिस संरक्षण में ट्रेड यूनियनों की व्यवस्था करते थे। सेंट पिटर्सबर्ग में मजदूर जो पहले ही परिवर्तित हो चुके थे और जिनको श्रमिक आंदोलन का खासा अनुभव था, सरकारी आज्ञा का पालन करते हुए आंदोलन को खत्म करने के समर्थन में बिल्कुल नहीं थे। निहत्थे लोगों पर अचानक गोलीबारी से 200 मारे गये और 800 जख्मी हो गए। देशव्यापी आंदोलन का लहर उत्पन्न हो गया। 4,00,000 मजदूरों ने काम छोड़ दिया। विद्रोह जल्दी ही दूर-दराज के इलाकों में फैल गया। कृषकों द्वारा दैनिक मजदूरी को बढ़ाने को लेकर जमींदारों के विरुद्ध आंदोलन किए गए। व्यवस्था पर हमला किया गया और 3,000 मेनरों को तोड़ दिया गया। बड़ी भूसम्पत्ति वाले मध्य कृषक प्रांतों में क्रांति सबसे गहरी थी। कृषक संघ, कृषक समितियां और सह-सहयोगी संस्थाओं का उदय हुआ। इस असंतोष को कुचलने के लिए सेना भेजी गई।

शहरों में, मजदूरों ने रेलवे, कारखाने, परिवहन व्यवस्था, बैंक, ऑफिसों, अस्पतालों और विश्वविद्यालयों में काम बंद कर दिया। काउंसिल या सोवियत की स्थापना मजदूरों द्वारा की गई जिसका उद्देश्य आम हड़ताल को नेतृत्व प्रदान करना था। सोवियत के प्रतिनिधि तीन पार्टियों से संबंधित थे - मैंशेविक, बोल्शेविक और सोशल रिवोल्युशनरिज़। सोवियत शक्ति का एक वैकल्पिक स्रोत को प्रस्तुत करती थी। सेंट पिटरसबर्ग सोवियत में मैंशेविको का प्रभुत्व था जो जिसका नेतृत्व लियोन ट्रोट्स्की कर रहा था। इजवेस्तिया सोवियत का समाचारपत्र था। मुख्य सोशलिस्ट नेता जैसे, लेनिन, मारतोव, प्लेखनोव और चारनोव और ट्रोट्स्की आदि जो निर्वासन में जी रहे थे अब धीरे-धीरे वापस लौट रहे थे। सोशलिस्ट पार्टी अपनी कमजोरियों की वजह से नेतृत्व प्रदान करने में असमर्थ थी जबकि कई जागरूक मजदूर वामदलों से ज्यादा निकट थे।

1905 की क्रांति में देशव्यापी स्तर की कई विशाल हड़तालें और रैलियां हुईं। जबकि असंतोष और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पोलैंड, उक्रेन और लैटविया में भी हुए। काला सागर नेवल दल में विद्रोह फैल गया। जार को कई सामाजिक क्रांतियों और विशाल विद्रोहों का व्यापक स्तर पर सामना करना पड़ा।

महत्त्वपूर्ण हथियार के रूप में सामने आया है जो पूर्ण ढांचे को प्रस्तुत करने वाला एक महत्त्वपूर्ण अस्त्र है। यह बात रूस के इतिहास पर पश्चिमी अध्ययन से अधिक स्पष्ट हो जाती है। व्यक्तिगत और राजनीतिक पूर्वाग्रह बहुत हद तक शोध की उत्पत्ति को प्रभावित करते हैं। सोवियत यूनियन के बारे में इतिहासकार मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचार का अनुसरण करते हुए पार्टी द्वारा संचालित राजनीतिक तानाशाही को प्रस्तुत करते हैं। जबकि पश्चिमी दुनिया के इतिहासकार इसका उल्लेख करते हुए कई कारणों से पक्षपात करते हैं। इसके बारे में और 1917 की क्रांति के अर्थ के बारे में 21वीं सदी में अध्ययन करने पर हम उस पुरानी कहानी को नए परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। हांलाकि 1917 की फरवरी से अक्टूबर तक की क्रांतियों की व्याख्या करने से पहले हम 1905 की क्रांति के पृष्ठभूमि पर गौर करेंगे जिसे पहले इतिहासकार अक्टूबर क्रांति का 'ड्रेस रिहर्सल' भी कहते हैं।

सदी के अन्त तक एक आर्थिक खस्ताहाल जार व्यवस्था कई तरीके से लोगों के सामने आ चुकी थी। प्रशासन 1891 के भयंकर अकाल से निपटने में विफल रहा और यूराल की पहाड़ियों से लेकर काला सागर तक 17 प्रांतों के करीब-करीब 36 मिलियन लोग इससे प्रभावित हुए थे। 1892 से भूख से करीब आधे मिलियन लोगों की मृत्यु हो गई थी। इसने एक लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति पैदा की और कई लोकतांत्रिक फोरम की स्थापना की गई जो अकाल के मूल कारणों का पता लगा सके। सोशल क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना के साथ ही पोपुलिस्ट आंदोलन को एक नया बल मिला। विकटर चारनोव ने मार्क्सवादी विरोध की कमान संभाली। पूंजीवाद पर आपसी विरोध को दरकिनार करते हुए शासन के विरुद्ध सभी विरोधी एकजुट हो गए।

अब जो किसान पोपुलिस्ट समर्थक थे क्रमशः मार्क्सवाद की ओर झुकने लगे और मार्क्सवाद लोकप्रिय होने लगा। स्ट्रूव, मारतोव और लेनिन सहित कई अन्य इस समय मार्क्सवाद में परिवर्तित हो गए।

फिगो, इस काल में जार के विरुद्ध एक लोक समाज, एक पब्लिक विकास और जनसंख्या के राजनीतिकरण और मौलिककरण की बात करते हैं। 1860 और 1914 ई. के बीच विश्वविद्यालय छात्र की संख्या में अपार वृद्धि हुई। उनकी संख्या इस समय 50,000 से बढ़कर 69,000 हो गयी। जिसमें से 45% महिलाएं थीं। दैनिक समाचारपत्रों की संख्या 13 से बढ़कर 856 हो गई और पब्लिक पुस्तकालयों की संख्या 250 से बढ़कर 16,000 हो गई। इस सबके परिणामस्वरूप जो उभरा उसे मध्यवर्ग नहीं बल्कि मध्य स्ट्राटा जो

फरवरी क्रांति ने विश्व के सभी सोशलिस्टों को स्तब्ध कर दिया। लेनिन, ट्रोट्रस्की, बुखारिन, क्रुप्सकाया आदि रूस लौटने के क्रम में थे, जो कई वर्षों से निर्वासन की जिंदगी बिता रहे थे। उनमें से कइयों के लिए रूसी क्रांति विश्व में पूंजीवाद के विरुद्ध क्रांति का एक हिस्सा थी। लेनिन ने जहा तक और क्रांति में कृषकों के महत्त्व योगदान की सराहना की वहीं दूसरी ओर कहा कि रूसी मजदूरों को ज़ार शासन को हमेशा के लिए उखाड़ फेंकने के लिए बूर्जुआ वर्ग का समर्थन करना चाहिए और तब एक क्रांतिकारी सरकार का गठन करना चाहिए जो कृषकों और राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के सहयोग से बने। यह कट्टर मार्क्सवादी विचारधारा के विरुद्ध था जिसमें एक गरीब देश पूंजीवाद का सामना कर रहा था और अब मजदूर वर्ग के शासन संभालने की बारी थी।

लेनिन अपने पेट्रोगार्ड पहुंचने के समय द्वितीय क्रांति के बारे में सोचना शुरू कर चुका था। उनसे मैंशोविकों के साथ पूर्ण अलगाव की नीति अपनाई, द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय के साथ पूर्ण अलगाव, प्रोविंसियल सरकार को कोई समर्थन नहीं और एक सैन्य मजदूर क्रांति और मजदूर वर्ग की तानाशाही और मजदूरों और गरीब किसानों के साझा सोवियत सरकार की बात कही।

यह मुक्त विचार सोवियत डेमोक्रेट के असेंबली में पेश किया गया जो "अप्रैल थिसिस" ने प्रसिद्ध हुआ। कई मानते हैं कि अप्रैल थिसिस मार्क्सवादी विचारधारा के विरुद्ध थी। ट्रोट्रस्की अभी भी मेंसेविक था। उसे अल्ट्रा वामपंथी माना जाता था और वह जुलाई में बोल्शेविक पार्टी में शामिल हो गया। तब से पार्टी में अप्रैल थिसिस को लेकर गुटबाजी प्रारंभ हो गई। तब लेनिन को इसे अधिक स्वीकार्य बनाना पड़ा। अब लेनिन ने प्रोविंसियल सरकार की तत्काल समाप्ति की बात न करके एक लम्बी क्रांति की बात करने लगा। सैन्य बदलाव के लिए समर्थन बढ़ रहा था। हजारों बोल्शेविक पार्टी में शामिल हो गए। हर जगह अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई और बुद्धिजीवी वर्ग और कई नेताओं को गृहयुद्ध का खतरा महसूस होने लगा।

जुलाई 1917 रूस का एक घटनाओं से पूर्ण माह था। जनरल कोरनिलोव के द्वारा दक्षिणपंथी विद्रोह को दबाने का प्रयास किया गया जिसे प्रोविंसियल सरकार के प्रमुख के नाते केरेंस्की को निपटना पड़ा। फिर इसी माह में प्रिंस लवोव को इस्तीफा देना पड़ा। सभी सोवियत आंदोलन कोरनिलोव मुद्दे पर एकजुट हो गए।

जुलाई के बाद सामाजिक ध्रुवीकरण अधिक तेज हो गया। एक सामाजिक क्रांति चल रही थी और जनसमूह के विचार में सोवियत शक्ति

ज़ार आधिपत्य के हरेक चिह्न के विरुद्ध एक अभूतपूर्व घटना का आयोजन किया गया। कारागारों पर हमले किए गए और सैकड़ों बंदीगृहियों को मुक्त कराया गया। गहरे ध्रुवीकरण की वजह से लूट और हत्याओं का सिलसिला शुरू हो गया जिसने क्रांति का एक नया रूप पेश किया। भीड़ अब सोशलिस्ट पार्टियों से नियंत्रित नहीं हो रही थी जो इस तरह की क्रांति के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाए थे। संघर्ष की कई नई शक्तियां इस दौर में उभर कर सामने आई। भीड़ और लोकप्रिय जनचेतना को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने की जरूरत है।

सोशलिस्टों ने एक कार्यकारी परिषद का गठन किया जिसका अध्यक्ष चकेदज और उपाध्यक्ष अलेकजेंडर केरेंस्की को बनाया गया। 600 सोवियत डिप्युटिज के सहयोग से पेट्रोगार्ड सोवियत बनाया गया और इस प्रकार दो शक्तिध्रुवों की बीच वार्तालाप की शुरुआत हुई। एक दोहरी शासन पद्धति उभरी जिसमें सोवियत प्रोविजनल सरकार के बूर्जुआ वर्ग की समर्थन कर सकते थे। प्रधानमंत्री प्रिंस लवोव और केबिनेट के एकमात्र सोवियत सदस्य केरेंस्की की प्रोविजनल सरकार व्यावहारिक तौर पर सोवियत समर्थन के बिना कार्यशील नहीं थी। लेनिन के शब्दों में, रूस विश्व का सबसे मुक्त राष्ट्र बन गया है।

प्रोविजनल सरकार बहुत ज्यादा विशिष्ट वर्ग की सरकार बन गई और जनसमूह से दूर हो गई। ज़ार का पदत्याग और प्रशासन, पुलिस और चर्च का धराशायी होना तीन सौ साल पुरानी रोमानेव वंश के शासन के अंत की अभिपुष्टि करता है।

लाखों कृषकों के लिए यह जमीन की मुक्ति, सच्चाई और इंसाफ का वादा था। उनके लिए क्रांति का अर्थ यही था। जबकि भविष्य बिल्कुल अनिश्चित था। प्रोविंसियल सरकार को कोई वास्तविक शक्ति नहीं थी। सोवियत सेना, रेलवे, पोस्ट, टेलीग्राफ सेवाओं को नियंत्रित करती थी। कंस्टीट्यूएंट असेंबली अभी तक गठित नहीं की गई थी और राजनीतिक वैधता की बात अभी दूर थी।

प्रोविंसियल सरकार ने दो मुद्दों के प्रति लापरवाही दिखाई – जमीन और युद्ध/शांति। सोवियत ने विदेश मंत्री मिलियुकोव की इसी बयान की निंदा की कि इस सभी भी वांछित विजय को लेकर समर्पित है। मजदूरों और सेना ने इसे एक बूर्जुआ एजेंडा माना जिसका मकसद साम्राज्यवादी मुद्दे पर कोई निर्णय नहीं लिया गया और इससे राजनीतिक और जातीय ध्रुवीकरण हुआ। कृषक विद्रोह होने लगे और सरकार की बूर्जुआ संपत्ति की रक्षा करने में व्यस्त माना गया।

सरकार और स्थानीय निकाय का आधुनिकीकरण करना चाहता था। इससे सत्ता के पुराने उच्चवर्ग से सरकारी निकायों के हाथों में स्थानांतरण का खतरा था। वह पुराने कम्यून सिस्टम को खत्म कर किसानों को जमीन का आधिपत्य देने का पक्षधर था। इसने फिर से पुराने उच्चवर्ग को नाराज कर दिया। डुमा के उसने कार्यान्वयन ने लिबरल को भी नाराज कर दिया। इस प्रकार उसके राजनीतिक अकेलेपन के कारण अंततः उसकी हत्या कर दी गई। जबकि राजशाही ने अपना क्रूर विध्वंस जनता पर जारी रखा और जबरदस्ती उसके असंतोषों को दबाने का प्रयास किया।

कुछ स्थिरता के बाद 1912 के बाद क्रांतिकारियों ने पुनः हड़ताल का रास्ता अपनाया। लेकिन रूस के 1914 ई. में युद्ध में शामिल होने के कारण स्थिति और दयनीय हो गई। युद्ध में शामिल होना सरकार के लिए भारी पड़ा और सेना को जर्मनी के हाथों बुरी तरीके से हार का सामना करना पड़ा और इसने सरकारी ढांचे को नेस्तनाबूत कर दिया। बड़ी संख्या में कृषक सैनिकों ने भूख और पराजय से हताश होकर अपने अधिकारियों के फरमानों की अवहेलना की और चुनौती देना शुरू की। ऊपरी ढांचे में भी विरोधाभास उत्पन्न होने लगे। रूसी हार की अफवाह ने भी स्थिति को बदहाल बना दिया।

युद्ध के दौरान वित्तीय संकट उभरकर सामने आया। सैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कारखानों की स्थापना की गई। परिवहन ढांचा खस्ताहाल हो गई थी और उपभोक्ता वस्तुओं के अभाव को असंतोष को और गहरा कर दिया। कीमतें बढ़ गईं और शहरों में मजदूरों को अपने श्रमिक में कटौती का सामना करना पड़ रहा था। भंडारगृहों पर कई हमले हएु और इससे सामानों की आपूर्ति में ज्यादा बाधा उत्पन्न हो गई।

इस तरह के वित्तीय और राजनीतिक माहौल में जब व्यवस्था जैसी कोई चीज नहीं रह गई थी तब 1917 की फरवरी क्रांति हुई। पुनः इस बार कपड़ों मिलों की महिलाओं और अन्य कारखानों के पुरुष मजदूरों की एक बड़ी आबादी 23 फरवरी को सेंट पीटर्सबर्ग की ओर मार्च करने लगे। शाम होने तक 1,00,000 लोग हड़ताल पर चले गये और 25 फरवरी तक और 1,00,000 लोगों ने काम छोड़ दिया। दूरदराज में क्रांतिकारी गतिविधियां तेजी से फैलने लगी और इस बदहाल कृषक वर्ग का पुरज़ोर समर्थन मिला। सदियों से बदहाल सैनिकों ने सड़कों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया। सड़कों पर सैनिकों में आपस में लड़ाई होने लगी जिसमें से एक हिस्से को मजदूरों को समर्थन हासिल था। एक अभूतपूर्व सामाजिक चेतना दिखाई देने लगी। 1905 के विपरीत, अब सेना भी क्रांतिकारी मार्ग को अपनाने लगी।

जबकि विलियान जी. रोजनबर्ग के अनुसार के उच्चस्तर में भी निम्नवर्ग को लेकर असंतोष था। रोजनबर्ग ने यह कैडेट पार्टी का अध्ययन करते हुए कहा है कि यह पार्टी उदारवादी प्रोफेशनल और बुद्धिजीवी वर्ग का समूह था जो बाद में व्यापारिक और औद्योगिक वर्ग के समूह से चिह्नित की जाने लगी।

रूसियों के लिए, 1917, वेरखी (उच्चवर्ग) और निजी (निम्नवर्ग) के बीच का संघर्ष था। बोल्शेविक अप्रैल से ही निम्नवर्ग द्वारा सत्ता प्राप्ति का समर्थन कर रहे थे। ये नीतियाँ लेनिन द्वारा तैयार की गई और आगामी महीने की घटनाओं ने इसे सींचा जिसने इसे एक प्रसिद्ध आंदोलन बना दिया।

इस प्रकार हम एक नए ढांचे पर पहुंच सकते हैं जो 1917 में एक नई समझ प्रस्तुत करती है जो पार्टी संगठन और व्यक्तित्व विचारधारा पर कम विश्वास करती है – सामाजिक ध्रुवीकरण पर जोर देती है और समाज के उच्चवर्ग और मजदूर, सेना और कृषकों के बीच एक खाई पैदा करती है। रोजनबर्ग के अनुसार घटनाओं और परिस्थितियों ने, न कि राजनीतिक दर्शन ने, राज्य के विरुद्ध क्रांति की स्थिति पैदा की जो बुर्जुआ वर्ग के हितों की रक्षा कर रही थी। उदारवादी लोकतंत्र के न्यायिक और नैतिक सीमा को निरस्त करना कई रूप में बोल्शेविकों की एक महत्त्वपूर्ण शाखा थी और जो ध्रुवीकरण हुई समाज से जोड़कर देखा गया और माना गया कि मजदूरों, सैनिकों और कृषकों का हित एक नये मौलिक सामाजिक पद्धति के द्वारा ही रक्षित किया जा सकता है।

विचारणीय प्रश्न:

1. रूसी क्रांति के कारणों की विवेचना कीजिए ?
2. रूसी क्रांति में लेनिन के योगदान की व्याख्या कीजिए ?

सनी के अनुसार ये व्याख्याएं बहुत संकीर्ण हैं। राजनीतिक फोरम और विचारों पर बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है और रूसी समाज में विरोधाभास को सही तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया।

सोवियत सिस्टम की व्याख्या का सबसे प्रभावी मॉडल जो एक पूर्ण आधिपत्य मॉडल है जो राजनीति से शुरू होकर इसी पर खत्म हो जाती है। अब व्याख्या में राजनीति मुद्दों से बदलाव आकर समाज पर जोर दिया जा रहा है जो भी इतिहासकार 1917 की घटनाओं की व्याख्या करने में ऐसा कर रहे हैं।

1965 में, लियोपोल्ड एच. हेंमसन ने विचार व्यक्त किया है कि युद्ध के आखिरी वर्षों में मजदूर वर्ग ने अपने आप को उदारवादी बुद्धिजीवी वर्ग से अलग कर लिया। उन्होंने कहा कि रूस के बड़े शहरों में यह ध्रुवीकरण बहुत गहरा था। और सेंट पीटर्सबर्ग के मेटल मजदूर मेंशेविक और एस.आर. के बदले व्यापक पैमाने में बोल्शेविक में शामिल हो रहे थे। आर्थिक हड़तालों में असफलता ने मजदूरों को क्रांतिकारी बना दिया और ये वर्ग शासन और उद्योगों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। 'मजदूर नियंत्रण' का विचार बहुत मजबूत था और सेना का पुनर्गठन किया गया।

फरवरी 1917 से सामाजिक ध्रुवीकरण और पैनापन हो गया। मजदूर वर्ग और सेनाओं ने अपने-अपने संगठन बना लिया - फैक्ट्री कमेटी, सेना कमेटी आदि जिससे वे अपने हितों के लिए लड़ सके।

एलॉन के. वाइल्डमैन के अनुसार सेना प्रोविंशियल सरकार को राष्ट्रीय संस्था न मानकर एक वर्ग के रूप में देखती थी। अखिल सैन्य कांग्रेस सोवियत नियंत्रण के समर्थन में आ खड़ी हुई।

बोल्शेविकों के अलगाव और शोषण जो जुलाई तक जारी था, से अक्टूबर में सत्ता प्राप्ति व्यापक ऐतिहासिक अध्ययन का विषय है। इतिहासकारों ने लेनिन और ट्रोट्रस्की के व्यक्तित्व की अति व्याख्या की है और मजदूरों और सैनिकों की भूमिका की अल्प समीक्षा की है।

पिछले दो दशकों में मजदूरों ने केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर लिया है। डाइने, कोक्सर, स्ट्रीव स्मिथ, डेविडमंडेल आदि ने ऐतिहासिक स्त्रोतों से रूसी मजदूर वर्ग को प्रस्तुत किया है। वे मजदूर जागरूकता को अराजकतावादी न कहकर सावधानपूर्ण घटना कहते हैं और जब प्रोविंसियल सरकार और फैक्ट्री मालिक उनके हितों का ध्यान रखते हैं तो वे हतोत्साहित हो गए और क्रांति पर विवश हो गए।

जनता के प्रत्यक्ष आधिपत्य को प्रस्तुत कर रहे थे। सोवियत नारा कारगर साबित हुआ और अक्टूबर 1917 में प्रोविंसियल सरकार को उखाड़ फेंकने में हजारों लोग समर्थन में आ खड़े हुए जिसे एक उच्चवर्ग के चिह्न में रूप में देखा जाने लगा था। फैक्ट्रियों और गांवों में सोवियत शासन की स्थापना की गई।

जबकि बोल्शेविकों को डुमा और अगस्त और सितम्बर के प्रोविंसियल चुनावों में काफी फायदा हुआ। मैंशेविकों को नुकसान हुआ और युद्ध के मुद्दे पर (एस.आर.) में बंटवारा हो गया। लेनिन ने मैंशेविकों की गठबंधन नीति की आलोचना की। वामपंथी एस.आर. युद्ध के मुद्दे पर बोल्शेविकों के साथ थे। सोवियत को सत्ता हस्तांतरण का सभी सोशलिस्ट पार्टियां समर्थन कर रही थी लेकिन लेनिन सैन्य विद्रोह का समर्थन कर रहा था।

पार्टी के अंदर बोल्शेविक नेताओं खासकर कामेनेव और जिनोवीव द्वारा व्यापक विरोध किया गया लेकिन लेनिन की बात मानी गई। इस प्रकार एक अल्पसंख्यक समूह ने अक्टूबर क्रांति का समर्थन किया और ज्यादातर उच्च पार्टी पदाधिकारी इसके विरुद्ध थे। सेना, रेडगार्ड आदि जो मुख्य बोल्शेविक शक्ति थे को प्रोविंसियल सरकार के मुख्यालय पर कब्जा करने को कहा गया। सरकार ने समर्पण कर दिया और सभी मजदूरों, सैनिकों और कृषकों की आधिपत्य मान ली गई। भूमि, युद्ध और रोटी पर वायदे किए गए। सोवियत शक्ति की स्थापना हुई। बोल्शेविक द्वारा इस सत्ता हथियाने को रूस में सोशलिस्ट आंदोलन के विखंडन के रूप में देखा जा सकता है।

हालांकि बोल्शेविकों द्वारा सत्ता प्राप्ति के बाद एक गृह युद्ध हुआ और फिर एक केन्द्रीय तानाशाही सरकार की स्थापना हुई।

ऐतिहासिक व्याख्यान की एक पूर्ण श्रृंखला इस बोल्शेविक सत्ता प्राप्ति को एक अल्पसंख्यक षड्यंत्रकारी समूह द्वारा सत्ता हथियाने के रूप में देखती है या क्रांतिकारी अराजकता के बीच शोषण की नीति की पूर्णता के बाद हुई घटना के रूप में। इस प्रकार बोल्शेविक उदय को जनता के इच्छाओं या भावनाओं के साथ जोड़कर नहीं देखा जा सकता है। रोनाल्ड सनी के अनुसार ये व्याख्या बोल्शेविक की सफलता में, लेनिन के – व्यक्तित्त्व को दर्शाता है 'सत्ता का भूखा एक प्रतिभाशाली व्यक्ति।'

अन्य इतिहासकार लेनिन को मजदूरों और सैनिकों और अन्य असंतोषकारी तत्वों के साथ जोड़कर देखते हैं और लेनिन को इन मुद्दों को लेकर संवेदनशील मानते हैं। इस प्रकार बोल्शेविक विजय में मुख्य जोर लेनिन और बोल्शेविक संगठन पर दिया गया है। क्रांति के इतिहास में व्यक्तितत्व और षड्यंत्र पर विशेष जोर दिया गया है।